विचार बिन्दु

निरंतर विकास जीवन का एक नियम है। और जो भी व्यक्ति खुद को सही दिखाने के लिए अपनी रूढ़िवादिता को बरकरार रखने की कोशिश करता है वो खुद को एक गलत स्थिति में पंहुचा देता है। –महात्मा गांधी

जनगणना समय पर हो ताकि.....

अगर मैं विस्तार में न जाऊं तो भी आप समझ जाएंगे कि किसी भी देश के लिए, उसकी नीतियों के निर्माण के लिए जनगणना का क्या महत्व होता है। भारत दुनिया के उन देशों में है जहां आज़ादी के पहले से नियमित रूप से जनगणना होती रही है। विद्वान लोग तो इस सिलसिले को पीछे खींच कर 800 से 600 ईसा पूर्व तक भी ले जाते हैं, यह बात वे ऋग्वेद के हवाले से कहते हैं। 321 से 296 ईसा पूर्व रचित कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी यह उल्लेख मिलता है कि शासन की कर नीति के निर्धारण के लिए जनगणना उपयोगी होती है। मुग़ल बादशाह अकबर के काल में रचित प्रशासनिक प्रतिवेदन आइन-ए-अकबरी में उस समय की जनसंख्या उद्योगों, संपदा और ऐसी ही अन्य अनेक बातों का विस्तृत उल्लेख इस तरफ इशारा करता है कि तब किसी तरह की जनगणना ज़रूर होती थी। निश्चय ही समय के साथ जनगणना के क्षेत्र और तकनीक का विस्तार हुआ है और अब उसकी प्रश्नावली निरंतर बड़ी और व्यापक होती गई है।

विदेशी शासन काल में हमारे देश की पहली व्यवस्थित जनगणना 1881 में हुई थी, हालांकि इससे पहले भी इस दिशा में अनेक प्रयास हुए थे। इसके बाद हर दसवें वर्ष नियमित रूप से जनगणना होती रही। यह क्रम 1941 तक निर्बाध चलता रहा। इसके बाद 1947 में देश आज़ाद हुआ और आज़ाद भारत की पहली जनगणना 1951 में हुई। यह क्रम भी 2011 तक निर्बाध चला। इसके बाद वाली जो जनगणना 2021 में होनी थी, वह किसी न किसी वजह से स्थगित होती रही और अब उम्मीद की जा रही है कि निकट भविष्य में हो जाएगी। यहीं यह बात भी ग़ौर तलब है कि भारतीय जनगणना के इतिहास में यह पहली बार है जब कोई जनगणना सही समय पर नहीं हो सकी है।

लेकिन बाकायदा जनगणना के अभाव में भी अनेक ऐसे शोध परक प्रयास होते रहे हैं जो जनगणना वाले काम को ही आगे बढ़ाते हैं। ऐसा ही एक काम एसबीआई ने अपनी एक शोध पूर्ण रिपोर्ट, जो हाल में प्रकाशित हुई है, के माध्यम से किया है। यहां हम इस रिपोर्ट की कुछ ख़ास बातों और उनसे उपजे सवालों पर बात कर रहे हैं। इस रिपोर्ट में जो बात हमें सबसे ज़्यादा खुशी देती है वह यह है कि सन् 2024 में देश की आबादी की वृद्धि दर 1% तक जा पहुंची है और यह 1951 के बाद न्यूनतम है। तब यह 1.25% थी और 1972 में सर्वाधिक 2.2% थी। सन् 2011 में, जब हमारी अब तक की आखिरी जनगणना हुई थी, देश की कुल आबादी 121.1 करोड़ थी और अब यह बढ़कर लगभग 142 करोड़ हो गई है। एक और अच्छी बात यह है कि भारत दुनिया का चौथे नम्बर का सबसे युवा देश है। हमसे अधिक युवा नाइजीरिया, फिलीपींस और बांग्लादेश हैं। सन् 2021 में हमारे देश में जनसंख्या की औसत आयु (मीडियन एज) 24 वर्ष थी और अनुमान है कि 2023-24 में यह बढ़कर 28-29 वर्ष हो जाएगी। ध्यान देने की बात है कि चीन की यह औसत आयु 2011 में 34.5 वर्ष थी जो अब बढ़कर 39.5 वर्ष हो गई है। इस औसत आयु के प्रभाव को इस रूप में भी देखा जाना चाहिए कि हमारे देश में काम कर सकने वाली आयु (15-59) के लोग 1971 से लगातार बढ़ते जा रहे हैं। अनुमान है कि 2021 में वे कुलजनसंख्या के 64.4% होंगे और 2031 तक बढ़कर 65.2% हो जाएंगे। यह स्थिति जहां बेहतर भविष्य की उम्मीदें जगाती है वहीं यह चुनौती भी प्रस्तुत करती है कि अब हमें पहले से अधिक लोगों के लिए रोज़गार का प्रबंध करना होगा। जो काम कर सकते हैं, उन्हें अगर हम रोज़गार उपलब्ध नहीं करा सकते हैं तो उनकी कुण्ठा, हताशा और नाराज़गी का बढ़ना स्वाभाविक होगा और इसके दुष्परिणामों की सहज ही कल्पना की जा सकती है। एक समय था जब देश में सरकार सबसे बड़ी रोज़गार प्रदाता थी। लम्बे समय तक ऐसा रहने से आम जन भी रोज़गार के लिए सरकार की तरफ ही देखने के अभ्यस्त हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त अब तक सरकारी नौकरी सुरक्षा और सामाजिक प्रतिष्ठा देने वाले भी मानी जाती रही है। ज्योतिष का राज योग कुल मिलाकर सरकारी नौकरी की ही तो बात करता है। अब परिदृश्य बदल गया है। सरकार ने बहुत सारी कल्याणकारी योजनाओं से स्वयं को अलग कर लिया है। इससे स्वभावत: सरकारी नौकरी के अवसर घट गए हैं। लेकिन जनता को इस बात के लिए मानसिक रूप से अभी तैयार होना है कि रोज़गार का मतलब केवल सरकारी नौकरी ही नहीं होता है। आम जन अभी भी सरकारी नौकरी हासिल करने को जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि मानते हैं। अब नौकरियां कम हैं और उन्हें चाहने वाले बहुत ज़्यादा, तो इस राह में तमाम तरह की अनैतिकताएं घुस पड़ी हैं। इस बात को समझते हुए हमें दो मोर्चों पर गंभीरता से काम करना है। पहला तो निजी क्षेत्र में काम के अवसरों को बढ़ाना, और दूसरे जनता के सोच में बदलाव लाना।

> **जनसंख्या परिदृश्य में जो बदलाव आ रहे हैं उन पर निगाह रखना और उनके अनुसार नीतियां और योजनाएं बनाना किसी भी लोकतांत्रिक सरकार की, बल्कि किसी भी सरकार की पहली ज़िम्मेदारी होनी चाहिए। यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि इस मामले में हमारी सरकारों का रिकॉर्ड बहुत अच्छा नहीं रहा है। उन्होंने वादे तो खूब किए हैं, सब्ज़ बाग़ दिखाने में कोई सरकार किसी अन्य सरकार से पीछे नहीं रही है, लेकिन उन वादों को यथार्थ का परिधान पहनाने में प्रायः कोताही बरती गई है।**

जब नेतागण ख़ास तौर पर अपने चुनावी भाषणों में इतने लाख या इतने करोड़ नए रोज़गारों के सृजन के वादे करते हैं तो वे जनता के मन में सरकारी नौकरियों की बारिश करने की ही छवि उभारते हैं, जबकि ऐसा करना अब नामुमकिन है। कितना अच्छा हो कि वे स्पष्ट कहें कि हम सब को सरकारी नौकरी नहीं दे सकते हैं। और इसी के साथ वे ऐसी नीतियां बनाएं जो नए उद्योग धंधों के विस्तार में सहयोगी हों। हमारे यहां रोज़गार के खूब अवसर सिरजे जा सकते हैं लेकिन बहुत सारे अवसर सरकारी अडंगे बाजी के कारण हमारे हाथों से फिसल जाते हैं। सिंगल विण्डो जैसी बहुत सारी बातें की जाती हैं लेकिन जो लोग उद्योग स्थापित करने के लिए आगे आते हैं उनके अनुभव कुछ और ही बताते हैं। सरकारों को इस तरफ बहुत गंभीरता से ध्यान देना होगा। इसी के साथ हमारी शिक्षा व्यवस्था में भी आमूल चूल बदलाव करना होगा। अभी हम जो डिग्रियां बांटते हैं वे केवल बेरोज़गारों की संख्या बढ़ाने के काम आती हैं। हमारे स्नातक या परास्नातक किसी भी तरह की दक्षता प्राप्त नहीं करते हैं। और इसमें उनसे ज़्यादा दोष उनका है जो पाठ्यक्रम बनाते हैं। इस तरफ ध्यान दिया जाना बहुत ही ज़रूरी है।

एक और बात। एसबीआई की यह शोध बताती है कि एक तरफ जहां देश में युवा और काम करने वाले बढ़ रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ देश उतनी ही तेज़ी से बूढ़ा भी हो रहा है। असल में देश में जनसंख्या वृद्धि की दर में कमी आ रही है और बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं आदि के कारण लोगों की जीवन प्रत्याशा बढ़ रही है। इस कारण यह एक तथ्य है कि सन 2011 से 2024 के बीच देश की आबादी में बुज़ुर्गों की हिस्सेदारी दो प्रतिशत बढ़ी है। सन 2011 में जहां केवल 8.6% अर्थात 10.4 करोड़ बुज़ुर्ग थे, अब 2024 में वे बढ़कर 10.6% अर्थात 15 करोड़ हो गए हैं। इनमें से बहुत सारे जो सरकारी या ऐसी ही किसी नौकरी में थे रिटायर हो चुके हैं और उनकी पेंशन और उन्हें देय अन्य सुविधाओं पर काफी व्यय होता है, वहीं दूसरी तरफ जिन्हें पेंशन नहीं मिलती है उनके सामने दो वक़्त की रोटी जुटाने का संकट भी खड़ा होता है और कोई भी सरकार इस संकट की अनदेखी नहीं कर सकती है। बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं सब को मिले, यह देखना सरकार का दायित्व है। केवल स्वास्थ्य सुविधाएं ही नहीं, सम्मानजनक जीवन यापन की सारी सुविधाएं जुटाना सरकार का प्राथमिक कर्तव्य है।

जनसंख्या परिदृश्य में जो बदलाव आ रहे हैं उन पर निगाह रखना और उनके अनुसार नीतियां और योजनाएं बनाना किसी भी लोकतांत्रिक सरकार की, बल्कि किसी भी सरकार की पहली ज़िम्मेदारी होनी चाहिए। यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि इस मामले में हमारी सरकारों का रिकॉर्ड बहुत अच्छा नहीं रहा है। उन्होंने वादे तो खूब किए हैं, सब्ज़ बाग़ दिखाने में कोई सरकार किसी अन्य सरकार से पीछे नहीं रही है, लेकिन उन वादों को यथार्थ का परिधान पहनाने में प्राय: कोताही बरती गई है। यह स्थिति बदलनी चाहिए। और यहीं यह भी कि सन 2021 में जो जनगणना होनी थी, उसे अब शीघ्रातिशीघ्र करवाया जाना चाहिए ताकि सही और पर्याप्त तथ्य नीति निर्माताओं के सामने हों।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

राठौड़ राजवंश की कुलदेवी नागणेच्या माता

सत्यप्रकाश शर्मा

राजपूतों के विभिन्न कुलों द्वारा विभिन्न देवियां कुल देवियों के रुप में पूजी जाती है। राजपूतों में राठौड़ों को अलग ही गौरव प्राप्त है शूरवीरता के उन्होंने जो आयाम स्थापित किए, वे देश में ही नहीं वरन् दुनिया में मिसाल बने इसलिए उनका स्थायी विशेषण 'रणबंका' बना। इन रणबंका राठौड़ राजपूतों की कुलदेवी 'नागणेच्या देवी' है। राठोड़ों की इस कुल देवी का नाम 'नागाणा' नामक स्थान से जुड़ा होने से इनको 'नागाणा री राय' (नागाणा की अधिष्ठात्री देवी) भी कहा जाता है 'नागाणा' एक गांव है जो राजस्थान राज्य के बाड़मेर जिले में स्थित है। इतिहासकारों के अनुसार इस बारे में एक कहावत भी प्रचलित है। 'नागाणा री राय, करै बैल नै गाय'। इसका मतलब है कि एक बार एक चोर बैल चुराकर भाग रहा था, पता चलने पर लोगों ने उस चोर का पीछा किया तो वह चोर डरकर मंदिर में जाकर छुप गया। व देवी से रक्षा करने की प्रार्थना की व शपथ ली आज के बाद कभी चोरी नहीं करुंगा तो उसी समय माता नागणेच्या के आशीर्वाद से वे दोनों बैल गाय बन गये, व वह चोर लोगों के कोप से बच गया।

इतिहासकारों के मतानुसार श्री नागणेच्या माता जी का मंदिर राठौड़ वंश के संस्थापक राव सीहाजी के पोत्र राव धूहड जी, तत्कालीन खेड़ प्रदेश के शासक ने 1305 ई. में स्थापित किया था। राठौड़ों की वंशावली में उनकी राजधानी कर्नाटक और कन्नौज बतलाई गई है। मारवाड़ के राठौड़ 'राव सीहा जी' के वंशज माने जाते हैं। माना जाता है कि लगभग सात सौ वर्ष पूर्व राव सीहा जी द्वारिका यात्रा के समय मारवाड़ आये और राठौड़ वंश की नींव रखी। राव सीहा जी राठौड़ों के आदि पुरुष थे। इसी कारण से सूर्यवंशी राठौड़ राजवंश की कुलदेवी हैं 'श्री नागणेच्या देवी'। माना जाता है कि राठौड़ वंश के संस्थापक राव सीहा जी के पौत्र राव धूहड जी व पिथाजी सोढ़ा कन्नौज गये, जहां पर राठौड़ राजाओं का राज था।

वहीं से नागणेच्या देवी की मूर्ति लाकर बाड़मेर जिले के कल्याणपुर गांव के पास 'नागाणा' नामक स्थान पर नागणेच्या देवी की मूर्ति स्थापित कर मंदिर का निर्माण करवाया। वहीं कुछ अन्य इतिहासकारों के अनुसार राव धूहड जी दक्षिण भारत के कोंकण जो (कर्नाटक) राज्य में स्थित है, से अपनी कुलदेवी चक्रेश्वरी माता नागणेच्या की मूर्ति लेकर आये और 'नागाणा' में मूर्ति की स्थापना की। इस प्रकार वहां स्थापित देवी 'माता नागणेच्या' के नाम से प्रसिद्ध हुई व राठौड़ वंश के राजपूतों के द्वारा पूजि जाने लगी।

राजपूत जाति के साथ ही कई अन्य जातियां जैसे– ओसवाल, राजपुरोहित, घांची, सुनार व प्रजापति व और अन्य जातियां भी माता नागणेच्या को अपनी कुलदेवी के रुप में पूजती है। इस धाम में सभी जातियों के लोगों की आस्था होने के कारण यह माता नागणेच्या का स्थान मारवाड़ का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान बन गया।

माता नागणेच्या सतयुग में मंछा देवी, त्रेतायुग में राठेश्वरी देवी, द्वापरयुग में पंखीणी देवी व कलयुग में 'नागणेच्या देवी' के रुप में पूजी जाने लगी।

ग्रंथों में वर्णानुसार "अष्टा दशभुजाओं वाली नागणेच्या माता महिष मर्दिनी का स्वरूप है। बाज या चील पक्षी उनका प्रतीक चिह्न है। जो कि जोधपुर रियासत, बीकानेर रियासत व किशनगढ़ रियासत के ध्वजों पर अंकित है।" नागणेच्या देवी को जोधपुर राज्य की कुलदेवी माना जाता है।

माता नागणेच्या के राज्य में कई और मंदिर भी है इन्हीं में एक बीकानेर में शहर से करीब दो किलोमीटर की दूरी पर दक्षिण पूर्व में है। देवी नागणेच्या का यह मंदिर एक विशाल और ऊंचे चबूतरे पर स्थित है, जिसके अन्दर अष्टादशभुजाओं वाली नागणेच्या देवी की चांदी की मूर्ति स्थापित है। इतिहासकारों के अनुसार देवी नागणेच्या की यह प्रतिमा बीकानेर राज्य के संस्थापक राव बीकाजी अन्य राज चिन्हों के साथ अपने पैतृक राज्य जोधपुर से बीकानेर लाए थे। वहीं माता का एक मंदिर जालौर में भी है। लेकिन मुख्य धाम 'नागाणा' को ही माना जाता है।

कहा जाता है कि राव धूहड जी ने माता नागणेच्या का मंदिर स्थापित कर 'नागणेच्या खांप राठौड़ों' को कुलदेवी की पूजा-अर्चना करने का आदेश व अधिकार दिया था। उन्होंने अपनी कुलदेवी नागणेच्या माता के नाम जमीन भी दी थी, जिससे मंदिर का रख-रखाव व विस्तार किया जा सके।

25 मार्च 2007 को राव धूहड जी जयंती एवं नागणेच्या माता के पाटोत्सव के अवसर पर जोधपुर के पूर्व महाराजा गज सिंह की अध्यक्षता में एक विशाल

जनसभा का आयोजन किया गया जिसमें तत्कालीन महामहिम उप राष्ट्रपति भैरों सिंह शेखावत मुख्य अतिथि थे व मारवाड़ के कई गणमान्य लोग व साधु संत भी थे। इस सभा में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि। इस ऐतिहासिक तीर्थ स्थान के संचालन व मंदिर के जीर्णोद्धार हेतु एक ट्रस्ट का गठन किया जाए। इस प्रकार 5 मई 2007 को 'नागणेच्या माता ट्रस्ट नागाणा' का विधिवत गठन हुआ।

वर्तमान में इस ट्रस्ट के न्यासी गण है। अध्यक्ष गज सिंह पूर्व महाराजा जोधपुर, वरिष्ठ उपाध्यक्ष महारानी हेमलता राजे, उपाध्यक्ष रावल किशन सिंह जसोल, महामंत्री ब्रिगेडियर शक्ति सिंह (से.नि.), मंत्री उम्मेद सिंह अराबा व अन्य न्यासी गण स्वामी प्रतापपुरी गादीपति तारातरा मठ, गजेन्द्र सिंह खींवसर, भवानी सिंह पाल, राजेश धनराज राठी, मेजर मानवेन्द्र सिंह जसोल व डा. समरजीत सिंह दासपां। ट्रस्ट मंडल उत्तरोत्तर मंदिर के भव्य निर्माण की और अग्रसर है।

श्रद्धालुओं के ठहरने के लिए एक आधुनिक सुविधाओं वाली धर्म शाला है, एक अत्याधुनिक उपकरणों वाली भोजन शाला है जिसमें श्रद्धालु को बहुत कम लागत पर शुद्ध व सात्विक भोजन उपलब्ध कराने की व्यवस्था है। यात्रीगण स्वयं भोजन प्रसाद बनाना चाहें तो उनके लिए सभी सुविधाओं वाली एक पाकशाला भी है। दर्शनार्थियों के ठहरने के लिए और भी कई धर्मशालाएं है। माता के धाम पर आने वाले श्रद्धालु रेल मार्ग द्वारा जोधपुर, पचपदरा या समदड़ी पहुंचकर वहां से सड़क मार्ग द्वारा कल्याणपुर से माता नागणेच्या देवी के मंदिर आसानी से पहुंच सकते हैं। वहीं निजी वाहन द्वारा सड़क मार्ग से भी माता के धाम तक पहुंच सकते हैं।

–सत्यप्रकाश शर्मा, जोधपुर।

बाल मुकुंद ओझा को "स्व. घनश्याम गोस्वामी स्मृति लाइफटाइम अचीवमेंट" अवार्ड मिला

अमरसिंह चौहान को किशन कुमार व्यास आजाद स्मृति सम्मान से नवाजा

- अगले वर्ष से दिनेश चंद्र सक्सेना की स्मृति में युवा जनसंपर्ककर्मी सम्मान दिया जाएगा
- प्रसार का राज्य स्तरीय जनसंपर्क सम्मान समारोह जिला उद्योग संघ भवन में आयोजित

बीकानेर, (निसं)। पब्लिक रिलेशंस एंड एलाइड सर्विसेज एसोसिएशन ऑफ़ राजस्थान (प्रसार) का राज्य स्तरीय जनसंपर्क सम्मान समारोह रविवार को रानी बाजार औद्योगिक क्षेत्र स्थित जिला उद्योग संघ भवन में आयोजित हुआ। कार्यक्रम में स्व. घनश्याम गोस्वामी स्मृति लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड जनसंपर्क विभाग के पूर्व संयुक्त निदेशक चूरु के बाल मुकुंद ओझा तथा स्व. किशन कुमार व्यास 'आजाद' स्मृति जनसंपर्क रत्न अवार्ड पूर्व सहायक निदेशक बीकानेर के अमर सिंह चौहान को अर्पित किया गया। कार्यक्रम जनसंपर्क विभाग के पूर्व संयुक्त निदेशक दिनेश चंद्र सक्सेना को समर्पित रहा। इस दौरान चंपा खेड़ी (मेड़ता) के वरिष्ठ साहित्यकार देवकिशन राजपुरोहित को विशिष्ठ सेवा सम्मान दिया गया।

बाल मुकुंद ओझा को घनश्याम गोस्वामी स्मृति और अमर सिंह चौहान को किशन कुमार व्यास आजाद मृति सम्मान से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बीकानेर (पश्चिम) विधायक जेठानंद व्यास थे। उन्होंने कहा कि सरकार की योजनाओं और कार्यक्रमों को जन-जन तक पहुंचाने में जनसंपर्क विभाग का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। विभाग के पूर्व अधिकारियों को सम्मानित करने की परंपरा उनके योगदान को याद करने का माध्यम है। उन्होंने कहा कि इससे जनसंपर्क सेवा के युवा अधिकारियों को प्रेरणा मिलेगी। महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने कहा कि वरिष्ठजनों का सम्मान हमारे संस्कार हैं। प्रसार द्वारा इस दिशा में बेहतर पहल की गई है। उन्होंने कहा कि वरिष्ठजन अनुभव की पाठशाला होते हैं। इनसे सीखना हमेशा ज्ञानवर्धक होता है। वरिष्ठ कवि कथाकार राजेंद्र जोशी ने दिनेश चंद्र सक्सेना के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि सक्सेना ने जनसंपर्क के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित किया।

जिला उद्योग संघ के अध्यक्ष द्वारका प्रसाद पचीसिया ने कहा कि जनसंपर्क विभाग में सदैव बीकानेर का बेहतर प्रतिनिधित्व रहा है। उन्होंने कहा कि आज के दौर में जनसंपर्क विधा को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने की जरूरत है। प्रसार द्वारा युवाओं को इससे जुड़ा प्रशिक्षण किया जाता है, तो जिला उद्योग संघ इसके आयोजन में भागीदारी निभाएगा।

प्रसार के प्रदेश उपाध्यक्ष तथा जनसंपर्क विभाग के सहायक निदेशक हरिशंकर आचार्य ने कहा कि अगले वर्ष से दिनेश चंद्र सक्सेना की स्मृति में युवा जनसंपर्क कर्मी को भी पुरस्कृत किया जाएगा। उन्होंने अब तक की आयोजनों के बारे में बताया और स्व. घनश्याम गोस्वामी तथा स्व. किशन कुमार व्यास आजाद के व्यक्तित्व से जुड़े पहलुओं को रखा। सम्मान के पश्चात बालमुकुंद ओझा ने बीकानेर पदस्थापन से जुड़ी यादें सांझा की। उन्होंने जनसंपर्क के माध्यमों में आए बदलाव के बारे में बताया और कहा कि सूचना प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया के दौर में जनसंपर्क का कार्य आसान हुआ है, लेकिन इसमें चुनौतियां बढ़ी हैं। इससे पहले अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर तथा दिनेश चंद्र सक्सेना को पुष्पांजलि अर्पित कर कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत की। साहित्यकार राजाराम स्वर्णकार, गोपाल जोशी तथा करियर काउंसलर डॉ. चंद्रशेखर श्रीमाली ने प्रशस्ति पत्र का वाचन किया। अतिथियों ने साफा, शॉल, श्रीफल, प्रशस्ति पत्र और स्मृति चिह्न भेंट कर राजपुरोहित, ओझा और चौहान का सम्मान किया। जनसंपर्क अधिकारी अमनदीप बिश्नोई ने आभार जताया। कार्यक्रम का संचालन ज्योति प्रकाश रंगा ने किया। इस दौरान नारायण दास आचार्य, नारायण दास रंगा, सुभाष बलवदा, संजय पुरोहित, डॉ. विजय शंकर आचार्य, बाल कल्याण समिति अध्यक्ष जुगल किशोर व्यास, डॉ. नमामि शंकर आचार्य, शंकर सिंह राजपुरोहित, मनमोहन कल्याणी, मालकोश आचार्य, पवन सारस्वत, हेमाराम जोशी, दुर्गाशंकर आचार्य, अविनाश आचार्य, अमित व्यास, दिनेश चूरा, सुभाष जोशी, जनसंपर्क विभाग के पूर्व कार्मिक राजेंद्र कुमार भार्गव, राजेंद्र जोशी, फिरोज खान, रमेश साध, विक्रम सिंह, आनंद सिंह, केशव आचार्य तथा स्व. घनश्याम गोस्वामी, किशन कुमार व्यास और दिनेश चंद्र सक्सेना के परिजन सहित बड़ी संख्या में मौजूद रहे।

बीकनेर में जर्जर भवनों की सुध नहीं ले रहा निगम प्रशासन

- नगर निगम प्रशासन ने मकानों को चिन्हित कर भवन मालिकों को नोटिस जरूर थमाए, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई

बीकानेर, (निसं)। शहर की चारदीवारी में कुछ भवन ऐसे हैं जो न सिर्फ बीकानेर की साख पर बट्टा लगा रहे हैं, बल्कि दुर्घटना को भी न्योता दे रहे हैं। पुराने शहर में बैदों की पिरोल में ऐसे कई मकान देखने को मिले हैं। इन मकानों की हालत जर्जर हो चुकी है।

लेकिन भवन मालिक इनकी संभाल नहीं कर रहे। नतीजन अब ये जर्जर भवन क्षेत्रीय लोगों के लिए भी खतरा बन गए हैं। हालांकि नगर निगम प्रशासन ने इन मकानों को चिन्हित कर उनके भवन मालिकों को नोटिस जरूर थमाए हैं। बावजूद इसके निगम की कार्रवाई महज कागजों तक सीमित है। जैसे निगम किसी बड़ी दुर्घटना का इंतजार कर रहा है। स्थानीय लोगों का कहना है कि कार्रवाई करने आने वाली टीम भ्रमण कर निकल जाती है। इनको गिराने का काम नहीं कर रही है। जबकि निगम में अनेक बार शिकायत भी की जा चुकी है। यदि भवन मालिक मकान ध्वस्त नहीं करता है, तो निगम ध्वस्तीकरण की कार्रवाई करेगा। हालांकि कार्रवाई के नाम पर महज कुछ मकानों को ही ध्वस्त किया गया है। इस पर जोन अधिकारियों का तर्क है कि चिह्नित मकानों में अधिकतर पारिवारिक विवाद से जुड़े का तर्क देते हैं, लेकिन इस तर्क के चलते आसपास के लोग परेशान है। उन्हें हरदम इन मकानों के गिरने का खतरा बरकरार रहता है। स्थानीय निवासी विजय रांका ने बताया कि जर्जर इमारतें कभी भी बड़े हादसे को अंजाम दे सकती है। जब वे यहां से गुजरते हैं तो डर सा बना रहता है। हर समय गलियों में बच्चे भी खेलते रहते हैं। यह एक गंभीर समस्या है प्रशासन को इस ओर ध्यान देने की जरूरत है। लोगों ने यह भी बताया है कि जहां ये मकान स्थित है वहां काफी तंग गलियां है। यहां न तो एम्बुलेंस जाने की सुविधा है और न ही दमकल गाड़ियों की। ऐसे में कोई बड़ा हादसा हुआ तो काफी नुकसान हो सकता है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 7 अक्टूबर, 2024

अश्विन मास, शुक्ल पक्ष, चतुरथी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2081, अनुराधा नक्षत्र रात्रि 2:25 तक, प्रीति योग प्रात: 6:40 तक, विष्टि करण प्रात: 9:48 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-मिथुन, बुध-कन्या, गुरू-वृष, शुक्र-तुला, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 2:25 तक है। रवियोग रात्रि 2:25 से आरम्भ होगी। आज भद्रा प्रात: 9:48 तक रहेगी। आज उपांग ललिता व्रत, ललिता पंचमी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:52 तक, शुभ 9:20 से 10:48 तक, चर 1:42 से 3:19 तक, लाभ-अमृत 3:09 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:26, सूर्यास्त 6:03

मेष

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में वाद-विवाद बढ़ सकते हैं। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

वृष

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन

नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ बनी रहेगी। आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी।

कर्क

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवार में आपसी अनबन बढ़ने का भय है। परिजनों के व्यवहार के कारण परेशानी हो सकती है।

कन्या

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

तुला

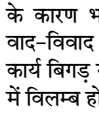

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।

वृश्चिक

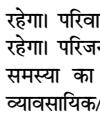

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज अतिथियों का आगमन बना रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

धनु

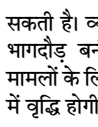

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आवश्यक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी।

मकर

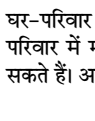

अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। महत्वपूर्ण कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

कुंभ

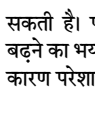

घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक-धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मीन

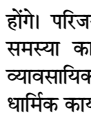

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।